International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 65-67 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

श्रीनरेशमेहताकेखंड- काव्यसंशयकीएकरातमेंभारतीयसंस्कृति

डॉ.सरूपरानी
अस्सिटेंटप्रोफेसर
हिंदी-विभाग
संतहरिसिंहमेमोरियलकॉलेजफॉरविमेन,
चेला-मखसूसपुर,होशियारपुर,पंजाब /

Date of Submission: 27-12-2024 Date of Acceptance: 06-01-2025

मानवजीवनकीसंपूर्णगतिविधियोकासंचालनइतिहास,परम्पराऔरसंस्कृतिकेद्वाराहोताहै।मानवकीश्रेष्ठसाधनाओंकीसबसेसुंदरप्रणीतिकोहीसंस्कृतिसेअभिहितकियागयाहै।इसमें मानवजीवनकीविशिष्टपद्धतितथाविकासकीदिशामेंसतत्गतिशीलकिंतुतटस्थजीवनव्यवस्थाहै।संस्कृतिशब्दबहुतप्रचलितहोतेहुएभीविद्वानइसेएकसहीपरिभाषादेनेमेंअसमर्थहैं। इसकीकोईसर्वसम्तकोईपरिभाषानहींबनसकीहै।

संस्कृतिकाव्युत्पतिअर्थ:

संस्कृतिशब्दसमउपसर्गतथाकृधातुकेयोगसेनिष्पनसरिक्रिया,संस्कारतथासंस्कृतशब्दभीउपलब्धहोतेहैं।सरीक्रियासे तात्पर्यशुद्धितथापरिष्कारकीक्रियाहै।

संस्कृतिकास्वरूप:संस्कृतिकासम्बन्धमानवतासेहै।मानवतासेतात्पर्यहैवेमानवीयगुण,जोमनुष्यकोपशुसेअलगकरतेहैं।अपनीमूलप्रवृत्तियोंकीतुष्टिकेआधारपरमनुष्यतथापशुमेंकोईअंतरनहींहै।जबमनुष्यता,पाशविकतासेसंघर्षकरकेअपना अस्तित्वप्रकाशमेंलातीहैतोयहक्रियासंस्कृतिकहलातीहै।अतःयहप्रकियाभौतिकनहोकरआंतरिकहै।हजारीप्रसादद्विवेदीकेशब्दोंमें

“नानाप्रकारकीधार्मिकसाधनाओं,कलात्मकप्रयत्नोंओरसेवा,भक्तितथायोगमूलकअनुभूतियोंकेभीतरसेमनुष्यउसमहान सत्यकेव्यापकऔरपरिपूर्णरूपकोक्रमशःप्राप्तकरताहैजारहाहै,जिसेहमसंस्कृतिकहतेहैं।”१संस्कृतिकाविकाससंस्कारोंसेउद्घाटितहोताहैऔरसंस्कारमानवकेभीतरी,बाहरीऔरवातावरणसेबनतेहैं।रामकमलरायश्रीनरेशमेहताकेकाव्यकेसांस्कृतिकपक्षकेबारेमेंलिखतेहै,”नरेशमेहताकीदृष्टिअपनेप्राचीनग्रंथोंतथाउनकेप्रतिपाद्यकोज्योंकात्यों,अंधस्वीकृतिप्रदानकरनेवालीनहींहै।वेमूल्यान्वेषणकीकोशिशमेंसमस्त सांस्कृतिकचेतनाकेविकासकोउनकेअंतर्विरोधोंकेसाथदेखतेहैंऔरस्वस्थपक्षकोहीस्वीकारकरतेहैं।“२

’संशयकीएकरात’नरेशमेहताद्वारालिखितरामकथापेखासकाव्यहै।रचनाकाआधारविशेषक्षणहै।इसविशेषक्षणमेंकेंद्रबिंदुप्रमुखहै-

संशयऔरसंघर्ष।श्रीनरेशमेहतानेबाह्यऔरआंतरिकसंशयओरसंघर्षसेसंबंधपौराणिकसंदर्भकोनएधरातलपरप्रस्तुतकरकेश्लाघनीयकार्यकियाहै।संक्षेपमेंकहाजासकताहैकिकथसरोत्रयद्यपिपुरानेहैंलेकिनअभिव्यक्तिओरअनुभूतिकेसारेतत्त्वआधुनिकहैं।‘संशयकीएकरात’मेंसंस्कृतित्वनिम्नलिखितहैं:-

श्रीनरेशने‘संशयकीएकरात’मेंस्पष्टकियाहैकियदिमनुष्यप्रत्येक**क्षणकीपृथकता** औरमहत्वकोसमझलेतोवहमानवजीवनकोसमझलेताहैऔरतबउसमेंपरितापकाकोईकारणनहींरहता।इसखंडकाव्यमेंकविनेअनेकबारक्षणकेमहत्वकोस्वीकाराहै।येपंक्तियांदृष्टवहैं:-

‘वहतोक्षणथा
गुणथा
जोकेहै,रहेगाभी।
केवलहमउसक्षणकेपूर्वउसमेंनहींथे
केवलहमही
उसक्षणकेबादनहींहोते।’
(समिधा – २,पृष्ठ२३१)

प्रभाकरशमकिशब्दोंमें,”नरेशकाक्षणबोधकतिपयअन्यनए कवियोंकीतरहक्षणिकताकापर्यायनहींहै।वहएकचिंतनपरकस्थितिकाअवबोधकहै।उसमेंएककवि-चिंतनकीअनुभूतिहै।”३

व्यक्तिस्वातंत्र्य केस्वर

बहुतपहलेसेउठचुकेहैं।इसमेंमानवस्वातंत्र्यमूल्यकेरूपमेंउ

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 65-67 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

भरा।धर्मवीरभारतीकेअनुसार
"व्यक्तिकस्वातंत्र्यकीउदयघोषणाकाअर्थअराजकता,उच्श्रृंखलतानिरंकुशताऔरदायित्वहीननहीहैं।उसकेसाथदायित्वभीहै।"४
संशयकीएकरात'कीप्रमुखसमस्याहै**युद्ध**।युद्धकेपरिपेक्ष्यमेंव्यक्तिओरसमाजकेसंबंधकाविवेचनकरनाऔरसत्एवंअसत्केदोनोपक्षोंकोसम्मुखरखकरनिर्णयकरना
,समाजबीतकाजबप्रश्नआताहै।रामभीइसीदुविधामेंहैं।येदुविधामात्रयुद्धनकरनेतकहीसीमितनहींबल्किइसकेदायरेमेंव्यक्तिएवंसमाजकेपरस्परसंबंधोकोभीउद्घाटितकियागयाहै।

भारतवर्षमें**कर्म**कोव्यापकऔरअदभुतमहत्वप्राप्तहै।कर्मकरनाहीगतिहै,कर्मकेबिनाकिसीकीगतिनहीं।कर्मकरोफलकीइच्छानरखो।श्रीनरेशमेहताकेकर्मकेबारेमेंविचारकीप्रत्येकयशस्वीकार्यकाउत्तरसंशयनहीं,वरन्कर्महुआकरताहै।इसीलिएव्यक्तिकोकर्मकेप्रतिकायरतानहींदिखानीचाहिए।खण्डकाव्यसंशयकीएकरातकायहउदाहरणदेखिए :-
पुत्रमेरे
संशययाशंकानहीं
कर्महीउतरहै
यशजिसकीशायाहै
उसकर्मकोकरो।
(समिधा– २,पृष्ठ२३२)
नरेशमेहताने**गतिशीलता**परभीबलदियाहै।उन्होंनेयहबतानेकाप्रयासकियाहैकेचलनेपरहीतीर्थऔरकीर्तिमिलतीहैऔरयहचलनामात्रबाहरीहीनहींहोताहै,वरन्भीतरीभीहोताहै।फिरभी,जैसाहो,इसकीपरवाहछोड़करचलतेरहनाचाहिए–
'हमकेवलचलतेहैं
अपनेमें
अपनेसेबाहर
धूपऔरअन्धकारचीरेहमचलतेहैं
चलनेपर
संभवहै
तीर्थमिले
कीर्तिमिले
चामरकी शायामिले
संभवहै
पसलीमेंवाणफंसे
प्यासेहीदमतोड़े।'
(समिधा२,पृष्ठ१९९)

संस्कृतिकेबदलतेमूल्योंमें**मानवतावाद**काउदयहुआ।'संशयकीएकरात'
मेंलक्ष्मणकीएकदृष्टिमेंमानवकीसार्थकताकर्ममेंहै,"शंकाओंओरसंशयोंकेघटाटोपसेरामकोनिकालकरहनुमानऔरलक्ष्मणकर्मकासमर्थनकरतेहैं।वास्तवमेंकर्ममानवजीवनकावर्णेयहैंउच्चतममूल्यहै।"५कविकर्मवादीजीवनदर्शनकाप्रतिपादनकरताहै।लक्ष्मणकेकथनसेकविकर्ममेंअटूटआस्थाप्रकटकरताहै :-
कितनेहीलघुहो
इससेक्या ? सार्थकहै।
स्वतवहैहमाराकर्म।।
(समिधा– २,पृष्ठ१९८)
जोमनुष्यअपनेकर्मएवंवचनोंपरअडिगरहतेहैंवहकभीविचलितनहींहोते।मानवकोअपनेकर्मपरविश्वासरखनाचाहिए:-
किंतु
किंतुयहअसंभवहै
बन्धु! यहअसंभवहै
कर्मकोकरोवर्चसको
न छीनसकेकोईभी
जबतकहमजीवितहै।
(समिधा – २,पृष्ठ२००)
लक्ष्मणकोरामकेमाथेपरचिंताकीरेखाएंस्वीकारनहींहै।वरन्वहतोयुद्धकोअपनाकर्तव्यसमझअपनाकर्मकरनाचाहतेहै:-
लंकायदिध्रुवपरभीहोतीतो
भागनहींपाती!
कर्मकीचुनौती
मुझेस्वीकारहै
अग्निकुंडकीमाथेपर
रामकेमाथेपर
चिंताकीरेखाएंदेखनहींसकता।
(समिधाहै२,पृष्ठ२०१)
'

संशयकीएकरात'मेंनरेशमेहताने**अहिंसा**कोप्रतिपादितकियाहै।राम
युद्धनहींचाहते,वेअहिंसाद्वारासीताकोप्राप्तकरनाचाहतेहैं।रामअपनेअहिंसावादीविचारोंकोप्रकटकरतेहुएकहतेहै:-
तो
लोसमर्पितहैतुम्हें
तुम्हारेअज्ञातबलोंको
इसक्षणकेद्वारा
दृष्टिभीगेउसमहाकालकी

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 65-67 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

समर्पितहैयह
धनुष,बाण,खड़गऔरशिरस्त्राण
मुझेऐसीजयनहींचाहिए
मानवकेरक्तपरपगधरती
सीताभीनहींचाहिए।
(समिधा – २,पृष्ठ२१२)

सत्यजबमानवतासेजुड़जाताहैतबवहमानवकेलिएसमर्पित सत्यकहलाताहै।सत्यकीप्रतिष्ठाकरतेहुएरामकहतेहैं:-

मैंसत्यचाहताहूं
युद्धसेनहीं
खड़गसेबनहीं
मानवकामानवसेसत्यचाहताहूं
क्यायहसंभवहै?
क्यायहनहीहै।
(समिधा– २,पृष्ठ२११)

निष्कर्षमें'संशयकीएकरात'पौराणिकताकाकथाभावलेकर रचागयाखंडकाव्यहै।उसकाकेंद्रबिंदुसांस्कृतिकहोनेकेसाथ साथसंशयहैजोकेआधुनिकभावलिएहुएहै।कथाकेपात्रपौरा णिकहैलेकिनउनकोवर्तमानयुगकेरंगमेंरंगगयाहै।

संदर्भग्रन्थसूची:-

१.हजारीप्रसादद्विवेदी,अशोककेफूल(इलाहाबाद:लोकभार तीप्रकाशन,१९९९),पृष्ठ६८
२ .प्रभाकरशर्मा,नरेशमेहताकाकाव्यविमर्शऔरमूल्यांकन (जयपुर:पंचशीलप्रकाशन,१९९६),पृष्ठ२९
३.धर्मवीरभारती,मानवमूल्यऔरसाहित्य (वाराणसी:भारतीयज्ञानपीठ,१९६०),पृष्ठ१२७
४.रामकमलराय,नरेशमेहताकविताकीऊर्ध्वयात्रा (इलाहाबाद:लोकभारतीप्रकाशन,१९८२),पृष्ठ५७
५.महावीरसिंहचौहान,नईकविताकीप्रबंधचेतना (महेसाना:गिरनारप्रकाशन,१९८१),पृष्ठ८१